माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

पाठ्यक्रम

पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण पत्रोपाधि परीक्षा

(द्विवर्षीय)

(सत्र 2001-2002 से लागू)

(DIPLOMA IN PRE PRIMARY)

विद्योचित - इकाई

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश, भोपाल

द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रस्तावित पाठयक्रम

पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र परीक्षा 2001--2002

(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र परीक्षा

प्रस्तावना

1— पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण का यह संशोधित एवं एक वर्षीय पाठ्यक्रम पूर्वप्राथमिक शिक्षा के स्पष्ट परिभाषित और मान्य उद्देश्यों एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा निर्धारित द्विवर्षीय पाठयक्रम के आधार पर पुनःगठित किया गया है।

प्रचलित पाठयक्रम के विषय में यह आम शिकायत सुनी जाती थी कि वह शास्त्रीय एवं बोझिल अधिक है तथा व्यवहारिक कम राष्ट्रीय अनुसंधान एवं शैक्षिक संस्थान में पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संबंधी एक कार्यक्रम विद्यमान है। जिसके लिए 'दो वर्ष 'की अवधि मानी गई है। राज्य की आर्थिक स्थिति को देखते हुए समिति ने इसी कार्यक्रम के आधार पर प्रचलित पाठयक्रम को एक वर्षीय पुर्नगठित करने का प्रयास किया था। पुनः पाठयक्रम की अवधि (2) वर्ष कर दी गई है।

प्रस्तुत पाठयक्रम में सैद्वांतिक एवं व्यवहारिक दोनो पक्षों को समान महत्व दिया गया है। पाठयक्रम नियोजित करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यवस्तु बाल विकास की दृष्टि से समुचित हो, साथ ही व्यवहारिकता लिए हुए भी हो केवल सैद्वांतिक न रह जायें। आहार पोषण संबंधी ज्ञान भी सम्मिलित किया गया है। जो कि बाल विकास कार्य के लिये आवश्यक है।

2— प्रत्येक सैद्वांतिक ज्ञान को व्यवहारिक योग्यता में परिणित करने के लिए उनसे संलग्न प्रायोगिक कार्यो का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इससे प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं को इस क्षेत्र में अधिक व्यवहारिक कुशलता प्राप्त होगी। संशोधित 'द्विबर्षीय' पाठयक्रग में शिक्षिकाओं में व्यवसायिक आत्म विश्बास जगाने हेतु सृजनात्मक एवं कलात्मक कार्यो के सिवाय बालोद्यान पद्धति मांटेसरी बुनियादी प्रगतिशील बालवाडी आदि सभी शिक्षण विधियों का भी पर्याप्त ज्ञान उपलब्ध कराया गया है। ऐसी आशा की जाती है कि इस पाठयक्रम के प्रयोग से शिक्षण प्रशिक्षणर्थी उपने कार्य क्षेत्र में अधिक स्वावलम्बी एवं कुशल शिक्षिकाएं सिद्ध होकर शिशुओं को शालाओं में औपचारिक शिक्षण के लिए तैयार करने में अपेक्षाकृत अधिक समर्थ बन सकेगी।

उद्देश्य :—

बालक के सर्वांगाण विकास के अन्तर्गत निम्न पहलू आते हैं।

1 शारीरिक तथा स्नायुगत विकास

2 भावनात्मक तथा सामाजिक विकास

3 ज्ञानात्मक विकास/बौद्धिक एवं भाषा का विकास

4 कलात्मक तथा सौंदर्यात्मिक विकास

प्राथमिक प्रशिक्षण के निम्न उद्देश्य होना चाहिए :—

1. पूर्व प्राथ. शिक्षा के प्रशिक्षण संस्था में ऐसी शिक्षिकाओं का निर्माण होना चाहिए जिसे ढाई वर्ष से 6 वर्ष तक की आयु के बालक की बृद्धि एवं विकास का वैज्ञानिक ज्ञान हो। तथा जो विभिन्न क्रिया कलापों के माध्यम से बालक के बाह्य वातावरण को संगठित कर सके।

2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के दार्शनिक पक्ष के छात्रों को परिचित करवाकर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के योगदान से अवगत कराना।

3. ढाई वर्ष से 6 वर्ष तक की आयु के सभी वर्ग के बालको के स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवंधन उचित आत्म पोषण, एवं बाल सेवा, पर्यावरण सेवा संगठनों से परिचत कराना।

4: श्रेष्ठतम अध्यापन की विधियो एवं प्राणलियों की जानकारी करके उपयुक्त विधियों द्वारा ढाई से 6 वर्ष तक की आयु के बालको की शारीरिक भावनात्मक एवं मूलभूत शक्तियों की क्रमिक बिकास सुनिश्चित करने की क्षमता शिक्षिका में उत्पन्न करना।

5. पूर्व प्राथमिक शालाओं के संगठन संचालन का ज्ञान देना तथा शाला के कार्यक्रमों में अभिभावक तथा समाज का योगदान प्राप्त करने के महत्व में प्रकाश डालना। एवं बिश्वास उत्पन्न करना।

6. पूर्व प्रायः शालाओं में औपचारिक शिक्षा को महत्व न देकर भाषा, विज्ञान अग्रेजी सामाजिक अध्ययन गणित (पर्यावरण) एवं सृजनात्मक कलाओं का नवीन संकल्पना के लिए बुनियादी ज्ञान देना।

प्रवेश पात्रता :—

1 1 जुलाई को प्रशिक्षणार्थी की आयु 17 वर्ष ही होना चाहिए तथा अधिकतम आयु 45 होना चाहिए।

2 प्रवेश के लिए हयार लेकेण्ड्री (+2) या माध्ययिक शिक्षा मंडल द्वारा मान्यता प्राप्त इसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

3 इस परीक्षा में छात्राएं स्वाध्यायी रूप से प्रविष्ट नहीं हो सकेगी।

4 माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल द्वारा उत्तीर्ण छात्राओं को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। जो नियमित प्रशिक्षित प्रशिक्षण छात्राएं मंडल की परीक्षा अनुउत्तीर्ण हो गई हो या किन्ही अपरिहार्य कारणों से अध्ययन पूर्ण करने के उपरांत परीक्षा में प्रविष्ट

न हो सकी हो तो उसे पुनः स्वाध्यायी छात्रा के रूप में अगले एक वर्ष की अबधि में पुनः परीक्षा में सम्मलित होने का अवसर मिलेगा।

— अनुत्तीर्ण छात्रओं जिन विषयों में अनुत्तोर्ण होगी उन्ही प्रश्न पत्रों में अगले एक वर्ष में परीक्षा देने में समर्थ होगी।

— अनुत्तीर्ण छात्राओं को उनके अनुत्तीर्ण होनेवाले वर्ष के बाद एक वर्ष की अनुत्तीर्ण विषय में प्रविष्ट होने का अवसर प्राप्त होगा।

— इस एक वर्ष में अनुत्तीर्ण होने के बाद उसे पुनः प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा।

सत्रावधि :—

1. प्रशिक्षण दो वर्ष का होगा। प्रथम सत्र 10 माह अर्थात 1 जुलाई से 30 अप्रैल का होगा तथा द्वितीय सत्र भी 1 जुलाई से 30 अप्रैल का होगा।

2. प्रशिक्षण छात्राओं के लिए परीक्षा में सम्मलित होने के लिए 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिबार्य होगी।

3. परीक्षा योजना :–पूर्व प्राथ.प्रशिक्षण कार्यक्रम दो भागों में विभाजित होगा। यथा सैद्वांतिक ज्ञान एवं व्यवहारिक कौशल तदानुसार परीक्षा के दो भाग होगें।

1 सैद्वातिक परीक्षा 2. व्यावहारिक परीक्षा

दोनो भागों में अलग–अलग उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा। परीक्षा का माध्यम हिन्दी/अंग्रेजी होगा।

प्रथम वर्ष:—सैद्धान्तिक परीक्षा

		अंक	समय
1.	पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं उसका भारत में ऐतिहासिक विकास	100	3 घण्टे
2.	बाल विकास	100	3 घण्टे
3.	शिक्षण विधियां एवं साधन सामग्री	100	3 घण्टे
4.	भाषा (हिन्दी एवं अंग्रेजी) तथा सामाजिक अध्ययन	100	3 घण्टे

द्वितीय वर्ष—

1.	बाल स्वास्थ्य आहार पोषण एवं बाल कल्याण	100	3 घण्टे
2.	बाल मनोविज्ञान	100	3 घण्टे
3.	बाल शाला प्रबन्ध एवं सामुदायिक जीवन	100	3 घण्टे
4.	सामान्य विज्ञान एवं गणित	100	3 घण्टे

व्यावहारिक परीक्षा

प्रथम वर्ष—

क—	आंतरिक मूल्यांकन	200
ख—	वाह्य मूल्यांकन	100

द्वितीय वर्ष—

क—	आंतरिक मूल्यांकन	200
ख—	बाह्य मूल्यांकन	100

आंतरिक मूल्यांकन के मुख्य बिन्दु

प्रथम वर्ष

		प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष
1.	बाल अवलोकन	40	25
2.	शैक्षणिक उपकरणों का निर्माण	50	50

3.	सैद्धांतिक विषयों से सम्बन्धित कार्य	40	40
4.	व्याबहारिक अध्यापन	50	50
5.	पाठ्य सहगामी क्रियायें	10	25
6.	क्षेत्र भ्रमण प्रतिवेदन I वर्ष / केस स्टडी II वर्ष	10	10

वाह्य मूल्याँकन :— 2 पाठ प्रत्यक्ष अवलोकन

प्रथम वर्ष—	(क) व्यक्तिगत पाठ प्रत्यक्ष अवलोकन	25	25
	(ख) सामूहिक पाठ—	50	50
	(ग) मौखिक व्यावहारिक अध्यापन एवं सत्र आधारित प्रश्न	25	25
			योग—100

मण्डल द्वारा नियुक्त एक (1) बाह्य परीक्षक द्वारा अध्यापन परीक्षा ली जावेगी। एक बाह्य परीक्षक एवं एक (1) संस्था का प्राचार्य सम्मिलित रहेगा। दोनों वर्ष एक सी परीक्षा व्यवस्था रहेगो ।

परीक्षाफल

परीक्षा उत्तीर्ण होने के लिये आवश्यक प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं श्रेणियां—

अ. सैद्धान्तिक—

(क)	विशेष योग्यता	75 प्रतिशत या अधिक
(ख)	प्रथम श्रेणी	60 प्रतिशत या अधिक
(ग)	द्वितीय श्रेणी	45 प्रतिशत या अधिक
(घ)	तृतीय श्रेणी	33 प्रतिशत या अधिक

व. व्यावहारिक परीक्षा—

(क)	प्रथम श्रेणी	70 प्रतिशत या अधिक
(ख)	द्वितीय श्रेणी	55 प्रतिशत या अधिक
(ग)	तृतीय श्रेणी	40 प्रतिशत या अधिक

शिक्षण प्रविधियां—

पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण छात्राओं के मार्ग दर्शन के लिये निम्नलिखित प्रविधियां दी गई हैं, जिनका आवश्यकतानुसार चयन किया जा सकता है।

1. व्याख्यान एवं चर्चा, सामूहिक चचा, पेनल डिस्कशन (विशिष्ठ) विशेषज्ञों के भाषण।
2. संगोष्ठी एवं वाद विवाद
3. वर्कशाप (कार्यशाला)
4. प्रदर्शन
5. सयस्या—समाधान
6. निर्देशित स्वाध्यायी

कार्य दिवस (प्रति वर्ष)

	आवश्यक	वांछनीय
कार्य दिवस की संख्या (5 घण्टे प्रति अवधि)	200	220
प्रशासकोय कार्य भर्ती	20	15
व परीक्षा आदि के लिए	(100 hrs)	
पाठ्यक्रम Transection	180 (900 hrs)	205 (1025 hrs)
सैद्धांतिक	400 hrs	450 hrs
प्रायोगिक	500 hrs	575 hrs

सहायक शिक्षण सामग्री का विकास कुछ सुझावात्मक सामग्री (प्रथम व द्वितीय वर्ष मिला कर)।

TLM का निर्माण व संकलन

— 20 गीतों का संग्रह
— 20 खेलों का संग्रह
— गुड़िया बनाना / मास्क बनाना (परिवार के सदस्यों के रूप में)।
— कठपुतली (glove and stick)
— शृंखला कार्डस
— वर्गीकरण हेतु कार्डस (52)
— पंजल (2, 3, 4, टुकड़ों वाली अलग–अलग)

— सह सम्वन्ध कार्ड्स

— पिक्चर अभिनोज

— संवेदनांकित (खोजी थैली, गद्य. ध्वनि वाक्स स्पर्श कार्ड आदि)

— क्रमीकरण (Seration) कार्ड्स (आकार के लिये)

— फर्स्ट एड किट्स

— चित्र में चित्र कार्ड्स

— कहानी चार्ट्स

फ्लैश कार्ड्स

पोषण—पोषण आहार सम्वन्धी सामग्री व चार्टस वनाना।

पूर्व प्राथमिक शिक्षक प्रमाण-पत्र परीक्षा 2001-2002

(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

प्रस्तावित पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष

पूर्णांक—100

समय—3 घण्टे

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	बिषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक
1	प्रश्न पत्र प्रथम—पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत एवं उसका भारत में ऐतिहासिक विकास	1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा का अर्थ, सिद्धांत, उद्देश्य एवं महत्व।	10 अंक
		2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के बिकास में निम्नलिखित शिक्षा शास्त्रियों के योगदान का संक्षिप्त परिचय	15 अंक
		i) रूसो — जीवन परिचय, शिक्षा में प्रकृतिवाद बालकेन्द्रित शिक्षा, अनुशासन	
		ii) पेस्टालाजी — शिक्षा दर्शन, मनोवैज्ञानीकरण एवं वस्तु पाठ।	
		iii) जान ड्युवी — शिक्षा में क्रियाशीलता "करो और सीखो" शिक्षा में स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र में शिक्षा का महत्व।	
		3. बाल शिक्षा में निम्नलिखित भारतीय शिक्षा शास्त्रियों का योगदान—	25 अंक

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवटित कालखंड
		i) महात्मा गांधी — संक्षिप्त परिचय, शिक्षा दर्शन बुनियादीं शिक्षा—उद्योग केन्द्रित शिक्षा में समवाय – (आर्थिक स्वाबलम्वन) मातृभाषा द्वारा शिक्षा ।		
		ii) विनोवा भावे — शिक्षण विषयक विचार		
		iii) रवीन्द्रनाथ टैगौर— शिक्षा में योगदान, प्रकृति के सम्पर्क में शिक्षा कला, शिक्षा का महत्व ।		
		iv) गिजुभाई वधेका— शिक्षा के वारे में विचार एवं प्रयोग		
		v) तारावाई मोडक— आंगनवाड़ी प्रथा भारतीय वातावरण में जीवनोपयोगी शिक्षा ।		
		4. भारत में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास में वालोद्यान पद्धति मान्टेसरी पद्धति का प्रभाव ।	5 अंक	
		5. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास में निम्नलिखित अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों का योगदान ।	10 अंक	
		i) युनीसेफ		
		ii) विश्व स्वास्थ्य संगठन		
		iii) विश्व खाद्य परिषद		

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	बिषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		iv) जिनेवा घोषणा–पत्र बालकों के अधिकार के संदर्भ में ।		
		6. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विकास मैं भारतीय सस्थाओं का योगदान		
		i) केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड—उद्देश्य योजनाएं :		
		ii) कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट–उद्देश्य कार्य ।		
		iii) महिला एवं बाल विकास विभाग–म. प्र. में योजनाएं	25 अंक	
		iv) समेकित बाल विकास योजना ।		
		v) नई शिक्षा नीति 1986		
		vi) यशपाल समिति रिपोर्ट—1990		
		vii) बाल निकेतन संघ शिक्षा में योगढान ।		
		viii) राजीवगॉधी शिक्षा मिशन (राज्या शिक्षा केन्द्र) उद्देश्य तथा कार्य ।		
		ix) एन.सी.ई.आर.टी.		
		x) एन. सी. टी. ई. (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद) परिचय एवं कार्य ।		
		xi) एस. सी. ई. आर. टी.		
		xii) एकलव्य—शिक्षा में नवाचार ववं साहित्य ।		

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाई वार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		7. म. प्र. सरकार द्वारा संचालित विभिन्न शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम । 1— आपरेशन ब्लेक वोर्ड 2— पढ़ना–बढ़ना 3 – सीखना सिखाना पैकेज 4— शिशु शिक्षा प्रयोजना 5 सतत् शिक्षा	10 अंक	

पूर्णांक—100

प्रथम वर्ष

समय – 3 घण्टे

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
1	प्रश्न पत्र—द्वितीय बाल विकास	1. आरम्भिक बाल्यावस्था के संदर्भ में बाल विकास के अध्ययन का महत्व ।	5 अंक	
		2. 1 अभिवृद्धि एवं विकास		
		2 परिपक्वन एवं सीखना		
		3 बालक के विकास में अनुवांशिक कारक		
		4 पर्यावरण सम्बन्धी कारकों का महत्व	15 अंक	
		5 बालक के विकास में मता पिता परिवार एवं समुदाय का योगदान ।		
		3. i बाल विकास के सिद्धाँत		
		ii बाल विकास की अवस्थाएं—	20 अंक	
		अ गर्भावस्था – गर्भधारण से जन्म तक		
		ब पूर्व शैशावस्था जन्म से दो सप्ताह		
		स शैशवास्था—2 सप्ताह दो वर्ष तक		
		द आरम्भिक बाल्यावस्था दो से छः वर्ष		
		iii बाल विकास की प्रत्येक अवस्था में विकास की गति विकासात्मक प्रतिकास		

स.क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		iv वाल्यावस्था की विशेषताएं तथा शिशु की आवश्यकता ।		
		नोट :—शिशु के विकास में मस्तिष्क विकास को विशेष बल-दिया जाय ।		
		4. शिशु के विकास के प्रमुख पक्ष	15 अंक	
		अ शारीरिक विकास—विकास की विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक विकास के प्रतिमान		
		ब गामक विकास—अर्थ महत्व गामक कौशलों के विकास में परिपक्वन का कार्य सूक्ष्म एवं स्थूल मांस—पेशियों का विकास । शारोरिक एवं गामक को प्रभाविग करने बाले तत्व ।		
		5. अ संवेगात्मक विकास-बाल संवेगों की विशेषताएं बाल्यावस्था के महत्वपूर्ण संवेग—भय, क्रोध, ईर्ष्या, परिपक्वन का विकास ।	15 अंक	
		5. ब सामाजिक विकास—आरम्भिक बाल्यावस्था में सामाजिक व्यवहार, सामाजिक असामाजिक व्यव-हार के रूप सामाजिक विकास को प्रभावित करने बाले कारक ।		
		6. अ संज्ञानात्मक विकास	15 अंक	
		पियाजे के सिद्धांत		

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		अ संवेदी प्रेरक काल— आय 1 2 वर्ष ब पाकू सक्रिया काल — आयु 2—7 यर्ष स मूर्त सक्रिया काल आयु 7—11 वर्ष द औपचारिक सक्रिया—आयु 7 बर्ष से ऊपर संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय निर्माण, बालकों के कुछ विशिष्ट प्रत्यय जैसे स्थान, समय, दूरी दिशा आदि।		
		7. नौतिक मूल्यों का विकास—स्वरूप, महत्व, उद्देश्य, अ भाषा विकास भाषा विकास का स्वरूप एवं प्रभावित करने वाले कारक। ब सौन्दर्य बोघ विकास सौन्दर्य बोध विकास के प्रतिरूप उद्देश्य और महत्व।	10 अंक	
		चित्रकला, पेन्टिग, रचनात्मक क्रियाएं, संगीत		
		8 हस्तकला का विकास में महत्व सास्वादृन एवं अभिव्यक्ति की आवश्यकता।	5 अंक	

प्रथम वर्ष

पूर्णांक—100 समय—3 घण्टे

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न-पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
	तृतीय प्रश्न-पत्र शिक्षण विधियां एवं साधन सामग्री	1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण शिक्षण विधियां। अ. बालोद्यान पद्धति सिद्धांत विधि एवं उपहार, मातृखेल, शिशुगीत, व्यापार ब. माण्टेसरी पद्धति का विकास, सिद्धांत, एवं स्वरूप साधन सामग्री एवं विधि स. पूर्व बुनियादी पद्धति, स्वरूप, जीवन उपयोगी कार्य द्वारा शिक्षा स्वावलंबन का महत्व द. नर्सरी पद्धति सर्वांगीण विकास में स्वतंत्र तथा निर्देशित खेलों का महत्व, बालको के स्वास्थ्य वर्धन में पोषण आहार का महत्व।	40 अंक	
		2. योजना पद्धति (प्रोजेक्ट प्रणाली) के सिद्धांत विधि, उपकरण।	10 अंक	
		3. नैतिक मूल्यों के निर्माण की विभिन्न क्रियाएं	5 अंक	
		4. दृश्य श्रव्य सामग्री के उद्देश्य शैक्षणिक महत्तव एवं प्रकार।	5 अंक	

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न-पव	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		5. सृजनात्मक एवं क्रियात्मक कलाओं का स्वरूप, उनके बिकास के तरीके जैसे चित्रकला, हस्तकला, नृत्य, संगीत, पेंटिंग, रचनात्मक सृजनात्मक क्रियाओं के विकास की विधि	10 अंक	
		6. ब्यावहारिक जीवन की क्रियाओं का स्वरूप, महत्व, प्रकार तथा आवश्यक साधन सामग्री	10 अंक	
		7. नई शिक्षा पद्धतियां (इन्होवेटिव मेथर्ड)	20 अक	
		अ. खेल द्वारा शिक्षा		
		ब. प्रगतिशील प्रणाली		
		स. थिमेटिक एप्रोच		
		द. बालकेन्द्रित स्वतन्त्रता, क्रियाशीलता पर आधारित शिक्षा,		

प्रथम वर्ष

सामूहिक पाठों की सूची

(अ) भाषा

1. कहानी
2. संगीत
3. खेल
4. वार्तालाप
5. खादी चित्रावली
6. मुखौटे नाट्य
7. कठपुतली नाट्य
8. अनुकरणात्मक कहानी
9. सृजनात्मक क्रियाएं (रोल प्ले)
10. चित्रों द्वारा कहानी अथवा रोलर बोर्ड
11. चित्र पोथी।

(ब) गणित

अंक पूर्व धारणा

1. आकार का क्रम आकृतियां क्रम से जमाना।
2. घटाना का क्रम।
3. आगे पीछे–ऊपर नीचे, दांयें–बांयें
4. कम ज्यादा, छोटा बड़ा, पास दूर, चौड़ा संकरा
5. एक से एक का सहसंबंध

6. इकाईयों को पहचानना
   जैसे लीटर, मीटर ग्राम, किलो आदि ।
7. अंक परिचय
8. अंक राशि समन्वय
9. शून्य की सकल्पना
10. अमानक इकाईयाँ
11. सिक्कों का परिचय
12. कम्प्यूटर के विभिन्न भागों का ज्ञान आधुनिक समाज में कम्प्यूटर का उपयोग ।

(स) संज्ञानात्मक

1. रंग परिचय–प्राथमिक एवं मिश्रित रंग
2. आकार–समानता तथा भेद को पहचानना ।
3. क्रम जमाना–छोटा-बड़ा, लम्बा, कम लम्बा, ऊंचा, ठिगना आदि ।
4. गंध–समानता भेद पहचानना ।
5. स्वाद–समानता तथा भेद पहचानना ।
6. स्पर्श–समानता तथा भेद पहचानना ।
7. ध्वनि–समानता तथा भेद पहचानना ।

(द) पर्यावरण विज्ञान

1. परिवेशीय जीव-जन्तु, पेड़ पौधे
2. हवा के खेल
3. पानी नापना
4. पानी पर हवा के दवाव का खेल
5. डूबने तैरने वाले पदार्थों का प्रयोग ।
6. पारदर्शक, अपारदर्शक
7. हल्का भारी

(इ) कलात्मक एवं सृजनात्मक विकास

1. कागज फाड़ना।
2. कागज काटना
3. चिपकाना
4. घड़ीकाम
5. स्प्रे काम
6. छापाकाम

(फ) दैनिक जीवन के कार्य

1. रुमाल घड़ी
2. बटन फ्रेम्स
3. कंघी करना/चोटी डालना
4. हाथ धोना
5. रुमाल धोना।

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न-पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
	चतुर्थ प्रश्न पत्र	1 भाषा विकास का महत्व उद्देश्य		
	भाषा तथा सामाजिक अध्ययन	अ—भाषा के कौशल		
		ब—भाषा के बुनियादी तत्व	5	
		2 ध्वनियां	5	
		3 व्याकरण—संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण अवयव की परिभाषा	5	
		4 भाषा के उपयोग :—	5 अंक	
		अ—भाव प्रकाशन का साधन		
		ब—विचारों के आदान प्रदान का माध्यम		
		स—संस्कृति संवाहिका		
		5 राष्ट्र भाषा का महत्व और उद्देज्य	5 अंक	
		6 कहानी व बालगीतों का महत्व उद्देश्य विशेषताएं प्रकार	5 अंक	
		7 वार्तालाप के महत्व व उद्देश्य	5 अंक	
		8 बाचन तथा लेखन की पूर्व तैयारी के विकास के लिए विशेष क्रियाएं	5 अंक	

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न-पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		सामाजिक अध्ययन :—		
		9 बालक के विकास में परिवार का योगदान—संयुक्त एवं एकल परिवार की भूमिका नागरिकता का अर्थ ।	10 अंक	
		10 जनसंख्या का अर्थ, जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य, जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता व महत्व ।	10 अंक	
		11 राष्ट्रीय एकता—अर्थ, महत्व व प्रभावित करने वाले कारक ।	5 अंक	
		12 यातायात के साधन, मानव जीवन में उपयोग, सड़क पर चलने के नियम ।	5 अंक	
		निरन्तर·····		

सामान्य अंग्रेजी :—

FIRST YEAR

1. Grammer

   I. Tense—Types — 10

   II. Simple Sentences

   III. Preposition

2. Translation

   I. Hindi to English translation — 5

   II. English to Hindi translation.

3. Letter writing

   I. Formal letters

   II. Applications. — 5

4. Essay Writing (100 words) — 10

   National Problem

   Festival, Environment, Games.

प्रायोगिक

क. प्रथम वर्ष (कुल अंक 300)		संख्या अंक
1. सत्र कार्य	200	
2. बाह्य मुल्यांकन	100	

---

1. सत्र कार्य

1i	बाल अवलोकन		40
2.	शैक्षणिक उपकरश निर्माण		50
3.	सैद्धांतिक विषयों से सम्बन्धित कार्य		40
4.	व्यावहारिक अध्यापन		50
5.	पाठय सहगामी क्रियाएं		10
6.	केस स्टडी		10
1.	बाल अबलोकन		
	अ—बगांवलोकन	5	10
	ब—र्संस्थावलोकक	5	20
	स—आदर्श पाठ	5	10
9·	शैक्षशिक उपकरणों का निर्माण		
	अ—भाषा हिन्दी	3	15
	अंग्रेजी	2	10
	साधन निर्माण		
	ब— गणित साधन निर्णाण	2	10
	म— संज्ञानात्मक साधन निर्माण	3	15

प्रायोगिक

क्र.	प्रथम वर्ष (कुल अंक 300)		संख्या अंक
	सैद्धांतिक विषयों से सम्बधित कार्य		50
	वृद्धि निगरानी चार्ट		
	पोषण आहार तालिका		
	टीकाकरण तालिका		
	स्वास्थ्य विवरण तालिका		
	प्रथमोपचार पेटी		
	धवन नक्शा वार्षिक		
	कार्य योजना सप्ताहिक कार्यक्रम		
	(समय तालिका) प्रगति पुस्तिका		
	रचनात्मक कार्य		
	मिट्टी काम		
	रंग काम आस पास के पेड़		
	पौधे व अन्य व अन्य वस्तुओं का संग्रह ।		
4.	व्यवहारिक कार्य		
	अ— सूक्ष्म पाठ	10	10
	ब— सामूहिक पाठ	10	10
	स— व्यक्तिमत पाठ	10	10
	द — कक्षा संचालन (दो सप्ताह)		25
			55

(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

प्रस्तावित पाठ्यक्रम — द्वितीय वर्ष — पूर्णांक—100 — समय—3 घण्टे

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
1	प्रश्न पत्र प्रथम बाल स्वास्थ्य, आहार, पोषण एवं बाल कल्याण	1. पूर्व प्राथमिक शालाओं के बालकों की शारीरिक वृद्धि का स्वरूप वृद्धि निगरानी (ग्रोथ मानिटरिंस) ऊंचाई वजन, के संदर्भ में आयु 0—6 वर्ष	7 अंक	
		2. स्वास्थ्य की संकल्पना बालकों के सर्वांगीण विकास में इसका महत्व। स्वास्थ्यवर्द्धन से शाला का योगदान, स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले तत्व।	10 अंक	
		3. व्यक्तिगत आरोग्य—त्वचा, नाखून, आंख, नाक, गला, कान आदि के संदर्भ में	5 अंक	
		4. शाला एवं परिवार के प्राकृतिक पर्यावरण का बालक के विकास में महत्व वस्त्र, पोष्टिक आहार, नियमित आदतें एवं दिनचर्या, पीने के पानी एवं शौचालय का प्रबन्ध।	5 अंक	
		5. पोष्टिक आहार पौष्टिक आहार के मूल तत्व, बालकों के लिए इनकी आवश्यकता, वातावरण में प्राप्त खाद्य पदार्थों में पौष्टिक तत्वों की उपलब्धि। अपर्याप्त पौष्टिक आहार नाश्ता एवं भोजन की तालिका (पौष्टिक तत्व एवं कैलोरीज के आयार पर) आयु 3—6 वर्ष के लिए)	10 अंक	

स.क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		कुपोषण—कुपोषण का अर्थ, लक्षण एवं कारण, इनसे उत्पन्न बीमारियां उनके लक्षण, उपचार एवं प्रतिबन्धक उपाय।		
		6. अ— बालकों को होने वाली सामान्य बीमारियां—सर्दी, खांसी, त्वचा सम्बन्धी बीमारिया फोड़े, फुन्सी खुजली।	15 अंक	
		ब— छूत की बीमारियां—खसरा, घटसर्प कुकर खांसी,		
		स— अन्य बीमारियां—हैजा, मोतीझिरा, पीलिया, पोलियो आदि।		
		उपरोक्त, बीमारियों के लक्षण, उपचार एवं सावधानियां।		
		द— टीकाकरण—टीकाकरण की आवश्यकता एवं महत्व।		
		टीकाकरण तालिका निर्माण करना।		
		7. प्राथमिक चिकित्सा—प्राथमिक चिकित्सा का अर्थ, शैशावस्था में होने वाली सामान्य आकस्मिक दुर्घटनाएं, उनके उपचार एवं सावधानियां। चोट तथा दुर्घटना में प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान।	10 अंक	
		प्राथमिक चिकित्सा पेटी—उपकरण। दवाइयां तथा उनके उपयोग।		
		निम्न परिस्थितियों में प्रथमोपचार—नाक, आँख, कान तथा गले में किसी चीज का अटक जाना, मोच आना, मधुमक्खी का काटना, खरोच, जलना, घाव, चोट		

स. क्र.	विषय एवं प्रश्नपत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		कुचला घाव, फ्रेक्चर, मूर्छा, कृत्रिम श्वसन विधि ।		
		8. बाल कल्याण का अर्थ बाल कल्याण सेवांएं परिवार कल्याण सेवाएं तथा दोनों सेवाओं का पारस्परिक सम्बन्ध । मध्यप्रदेश शासन द्वारा बाल एवं परिवार कल्याण की सेवाएं । ग्रामीण गन्दी बस्ती तथा आदि-वासीं बालकों की आवश्यकताएं ।	8 अंक	
		9. सामाजिक जीवन से उपेक्षित बालकौं की शिक्षा अनाथ एवं परित्यक्त बालकौं की शिक्षा व्यवस्था ।	5 अंक	
		10. विशेष आवश्यकता वाले बालकौं की शिक्षा व्यवस्था ।	15 अंक	
		अ दृष्टिवाथित, श्रवण, वाधित, मूक तथा शारीरिक, मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालकौं की पहचान, एवं दोषौं के लक्षण ।		
		ब सहायक मार्गदर्शी सेवाएं —स्वास्थ्य केन्द्र से परामर्श		
		स विशिष्ट शिक्षण संस्थाओं कीं जानकारी		
		द समेकित शिक्षा व्यवस्था—सामान्य बालकों के साथ शिक्षा की संभावनाएं ।		
		11. निम्नलिखित के संदर्भ में संक्षिप्त जानकारी—	10 अंक	
		अ बी एच ए (बालेन्टरी हेल्थ एसोसिएशन)		
		ब आर सी एच (री प्रोडेक्टीव हेल्थ सेन्टर)		
		स यौन शिक्षा (सैक्स एज्युकेशन)		

(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

द्वितीय वर्ष

पूर्णांक—100

समय—3 घण्टे

स॰ क्र.	विषय एवं प्रश्न-पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
	प्रश्न-पत्र द्वितीय विषय—बाल मनोविज्ञान	1. विकासात्मक मनोविज्ञान, उसका अर्थ एवं महत्व 2. बाल विकास की अवस्थाएं अ बाल्यावस्था ब पूर्व किशोरावस्था स किशोरावस्था द युवावस्था उपरोक्त प्रत्येक अवस्था की बिशेषताएं एवं प्रत्येक में बालकों की आवश्यकताएं:—	5 अंक 15 अंक	
		3. सीखना—स्वरूप, सिद्धांत, सीखने में रूचि, अभिवृत्ति, प्रेरणा, एवं प्रोत्साहन का महत्व 4. बुद्धि—अर्थ मानसिक आयु बुद्धि लब्धि 5. स्मृति—विचार, तर्क एवं समस्या समाधान 6. व्यवहार समस्याएं:— 1. स्नायुविक विकृति 2. अंगूठा चूसना	10 अंक 5 अंक 5 अंक 15 अंक	

स. क्र.	विषय एवं प्रश्न-पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		3. दांत से नाखून काटना		
		4. आक्रमकता		
		इनके कारण लक्षण एवं उपचार		
		7. असामान्य बालकों का मनोविज्ञान प्रतिभाशाली, मंदबुद्धि समस्यात्मक तथा विकलांग बालक–उनकी सहायता करने के उपाय।	15 अंक	
		8. बाल निर्देशन–अर्थ, आवश्यकता तथा विधि (0–6) वर्ष के बालकों के संदर्भ में)	5 अंक	
		9. बालकों के अध्ययन की विधियां–निरीक्षण, केश स्टडी, विकास अभिलेख।	10 अंक	
		10. खेल अ स्वरूप सिद्धांत एवं महत्व	15 अंक	
		ब कार्य तथा खेल में अन्तर		
		स खेलों के प्रकार–आंतरिक बाह्य व्यक्तिगत सामूहिक, स्यतंत्र निर्देशित		
		द बौद्धिक कलात्मक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक खेल		
		इ बालकों के खेलों को प्रभावित करने वाले तत्व।		

द्वितीय वर्ष

पूर्णांक—100 समय—3 घण्टे

स. क्र.	बिषय एवं प्रश्न पत्र	बिषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
	बाल शाला प्रबंध एवं सामुदायिक जीवन प्रश्न पत्र तृतीय	1 बालभवन तथा साज सज्जा बालभवन—भवन का स्थान: स्थिति (वातावरण) भूमि हवा, प्रकाश, जल की व्यवस्था। साज-सज्जा, विभिन्न प्रकार के कक्षों की रचना व व्यवस्था खेल का मैदान—मैदास का भाग व सफाई। लघु वाटिका—(पर्यावरण की सौन्दर्यात्मक व्यबस्था) फर्नीचर—चयन की बिशेषता, योग्यता, प्रकार देखभाल	15 अंक	
		2— बाल साहित्य—अर्थ, उद्देश्य, महत्व' बाल साहित्य के चयन के तरीके। अ— बाल संग्रहालय—अर्थ, उद्देश्य, महत्व, शिक्षा, में उपयोगिता। ब— बाल वाचनालय—(शैक्षणिक उपयोग)	15 अंक	
		3— प्रतिबेदन अभिलेख—अर्थ, उपयोगिता, रिकार्ड का सुव्यवस्थीकरण।		

क्र. क्र.	विषय एवं प्रश्न पत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखंड
		अभिलेख के प्रकार—प्रवेश रजि. कक्षा(छात्र) उपस्थिति रजि. शिक्षक उपस्थिति रजि. सम्पत्ति रजि. स्वास्थ्य रजि. आवक जावक रजि. दैनिक डायरी।		
		छात्र वृत्ति रजि. केशबुक, व्हाउचर फाईल. लेजर फीस रजि. प्रगति पुस्तिका, सचय सूची (केस स्टडी) सर्विस बुक, वेतन रजि.		
		4 – प्रधान अध्यापक के गुण व कार्य एवं शिक्षक तथा सहायकों के गुण व कार्य	5 अंक	
		5— शिक्षक विद्यार्थी अनुपात के उद्देश्य एवं महत्व	5 अंक	
		6— समय विभाग चक्र :—अर्थ, उद्देश्य, महत्व, रचना के सिद्धात व प्रभावित करने वाले कारक, शालेयवार्षिक साप्ताहिक व दैनिक योजना की रूप रेखा।	10 अंक	
		7— ग्रामीण व शहरी समय विभाग चक्र में अन्तर, मान्यता तथा अनुदान प्राप्ति के नियम।	5 अंक	
		8 – मध्य प्रदेश में शैक्षिक प्रशासन का ढांचा - आयुक्त से लेकर जिला पंचायत तक की जानकारियाँ।	10 अंक	
		9 – बालक के सर्वांगीण बिकास में विद्यालय, परिवार समाज में सामन्जस्य शिक्षक माता पिता, अभिभावक, सगुदाय के लोगों में सामन्जम्य	5 अंक	
		10— बालकों की शिक्षा में माता पिता अभिभावक, समुदाय को शिक्षित करने के तरीके।	10 अंक	
		लघु पत्तिका, समाचार पत्र, गृह सम्पर्क, साक्षात्कार, प्रदर्शनी का आयोजन वाचनालय नुक्कड़ नाटक।		

पूर्णांक—100

द्वितीय वर्ष

समय— 3 घण्टे

स. क्र.	विषय एवं प्रश्नपत्र		विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखण्ड
4.	प्रश्न पत्र चतुर्थ पर्यावरण, विज्ञान, गणित	1	विज्ञान का अर्थ, महत्व व उददेश्य	15 अंक	
			अ हवा का अस्तित्व		
			ब जल का उपयोग, गुण, प्राप्ति के साधन		
			स प्रकाश प्राप्ति के साधन, उपयोग		
			द ध्वनि तथा संगीत में भेंद		
		2	वनस्पति के जोवित रहने के आवश्यक तत्व वनस्पति के अंग व कार्य, वनस्पति के मनुष्य जीवन में उपयोग।	10 अंक	
		3	चट्टाने मिट्टी के प्रकार, अर्थ, विशेषता, उपयोगिता	5 अंक	
		4	अ. दिन–रात, सूर्य चन्द्र ग्रहण मौसन एवं जलवायु को श्रृतुए प्रभावित करने वाले तत्व भौगोलिक परिस्थितियों का भानव जीवन पर प्रभाव	15 अंक	
			ब पर्वत नदी, मैंदान का व्यावहारिक जीवन में महत्व।		
			स प्राकृतिक क्रियाएं :–बाढ, ज्वालामुखी, भूकम्प के लाभ, हानि		
			गणित :		
		5	जोड, घटाव, गुणा, भाग, दशमलव के जोड घटाव गुणा, भाग,	10 अंक	

स. क्र.	विषय एवं प्रश्नपत्र	विषय वस्तु इकाईवार	आवंटित अंक	आवंटित कालखण्ड
		6 औसत व प्रतिशत की जानकारी	10 अंक	
		7 गणित की साधन सामग्री का महत्व उपयोग	5 अंक	
		विज्ञान—		
		8 अ पदार्थों की अवस्थाएं तथा विशेषताएं	10 अंक	
		व भिश्रण तथा योगिक के तत्व की परिभाषा विशेषता तथा अंतर ।		
		9 ताप निर्मित के प्रकार, जीवन में उपयोग	5 अंक	
		10 चुम्बक ।– गुण, आकर्षण, विकर्षण,	5 अंक	
		11 जीवों के लक्षण सजीव तथा निर्जीव में भेद ।	10 अंक	
		पौधे तथा प्रणियों की कोशिका की रचना कार्य व भेद ।		

द्वितीय वर्ष प्रायोगिक — कुल अंक—300

	संख्या—अंक
1. सत्र कार्य—200	
2. बाह्य मूल्यांकन—100	

सत्र कार्य	संख्या—अंक
1. बाल अवलोकन	25
2. शैक्षणिक उपकरण निर्माण	50
3. सैद्धांतिक विषयों से सम्बन्धित कार्य	50
4. व्यावहारिक अध्यापन	50
5, पाठ्य सहगामी क्रियायें	25

1. बाल अवलोकन		
(अ) व्यक्तिगत अवलोकन	05	15
(ब) आलोचना पाठ	05	10
2. शैक्षणिक उपकरणों का निर्माण		
(अ) भाषा	2	10
(ब) गणित	1	05
(स) विज्ञान	2	10
(द) संज्ञानात्मक	2	10
(इ) रचनात्मक (कार्य)	1	15
(हस्तकार्य)		

द्वितीय वर्ष प्रायोगिक | कुल अंक—300

	संख्या - अंक
3. सैद्धान्तिक विषयों से सम्बन्धित कार्य	45
बाल विकास चार्ट	
समुदाय में जनजागरण	
नुक्कड़ नाटक	
रैली	
गृह भेंट	
कठपुतली शो	
सभा	
बाल प्रवास	
प्रोजेक्ट	
प्रदर्शनी	

सामूहिक पाठ

(अ) भाषा

1. समान अक्षर जमाना
2. आकृतियां निकालना
3. लकीरें खींचना
4. अक्षरों की पहचान
5. शब्द बनाना
6. शब्दों के खेल

प्रथम अक्षर से शुरू होने वाले अन्तिम अक्षर समान

(ब) गणित

1. महीनों के नाम जानना, सप्ताह के नाम जानना
2. दशमान परिचय
3. जोड़ बाकी
4. गुणा, भाग, एकांकी
5. टिकट का खेल
6. बाजार का खेल
7. सम, विषम

सामूहिक पाठ—

8. Approach to problem solving :—

(a) Problem definition (b) Algon them (c) Felow charting

(d) Writing programme (Basic)

(स) पर्यावरण विज्ञान

1. अंकुरण के प्रयोग
2. चुम्बक के खेल
3. तालाब बनाना
4. ठोस द्रव तथा वाष्प
5. प्राणी जीवन का परिचय

(द) संज्ञानात्मक

1. ध्वनि—साम्य तथा भेद पहचानना
2. समय का ज्ञान
3. दूरी
4. दिशा
5. स्थान
6. वर्गीकरण

सामूहिक पाठ—

(इ) कलात्मक एवं सृजनात्मक विकास

1. धागा काम
2. मोम काम
3. चित्रकला
4. रंग काम
5. जोड़ काम
6. निरूपयोगी वस्तुओं द्वारा उपकरण निर्माण

(ई) दैनिक जीवन के कार्य

1. अतिथि सत्कार
2. शांति का खेल
3. सब्जी काटना
4. छीलना
5. कचुम्बर बनाना /सलाद बनाना

माशिममुभो—145—विद्यो.—12–6–01—500

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

क्रमांक/ 1189 /प.स./2003

भोपाल, दिनांक 3/3 /2003

// आदेश //

पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण पत्रोपाधि परीक्षा, शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण पत्रोपाधि परीक्षा एवं डिप्लोमा इन एज्यूकेशन परीक्षा में प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात ही द्वितीय वर्ष में प्रवेश की पात्रता है ।

2. पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण पत्रोपाधि परीक्षा तथा शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण पत्रोपाधि परीक्षा के छात्र/छात्रायें यदि द्वितीय वर्ष की परीक्षा में दो अवसरों में अनुत्तीर्ण रहें अथवा प्रथम वर्ष उत्तीर्ण करने के बाद द्वितीय वर्ष की परीक्षा निरन्तरता में दो वर्षों में ना बैठे तो उन्हें पुनः प्रथम वर्ष की परीक्षा में नियमित प्रवेश लेना होगा तथा प्रथम वर्ष की पूर्व की परीक्षा निरस्त मानी जावेगी ।

3. डिप्लोमा इन एज्यूकेशन परीक्षा के छात्र/छात्रायें यदि द्वितीय वर्ष की परीक्षा के दोनों अवसरों (प्रथम अवसर मुख्य परीक्षा के समय एवं द्वितीय अवसर आगामी पूरक परीक्षा के समय) में अनुत्तीर्ण रहें अथवा प्रथम वर्ष परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद द्वितीय वर्ष की परीक्षा के दोनों अवसरों में ना बैठे तो उन्हें पुनः प्रथम वर्ष की परीक्षा में नियमित रूप से प्रवेश लेना होगा तथा प्रथम वर्ष की पूर्व की परीक्षा निरस्त मानी जावेगी ।

सचिव
माध्यमिक शिक्षा मण्डल
मध्यप्रदेश, भोपाल

पृ0क्र0/ 1190 /प.स./2003

भोपाल, दिनांक 3/3 /2003

प्रतिलिपि:–

1. समस्त संभागीय अधिकारी, मा0शि0मंडल, म0प्र0
2. समस्त सहायक सचिव/क0अ0परीक्षा/गोपनीय/वियोचित/एस.ए.डाटा की ओर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु ।
3. पंजीयक–डाटा/परीक्षा/वियोचित की ओर सूचनार्थ ।

सचिव
माध्यमिक शिक्षा मण्डल
मध्यप्रदेश, भोपाल